मुख़्तसर मुलाक़ात

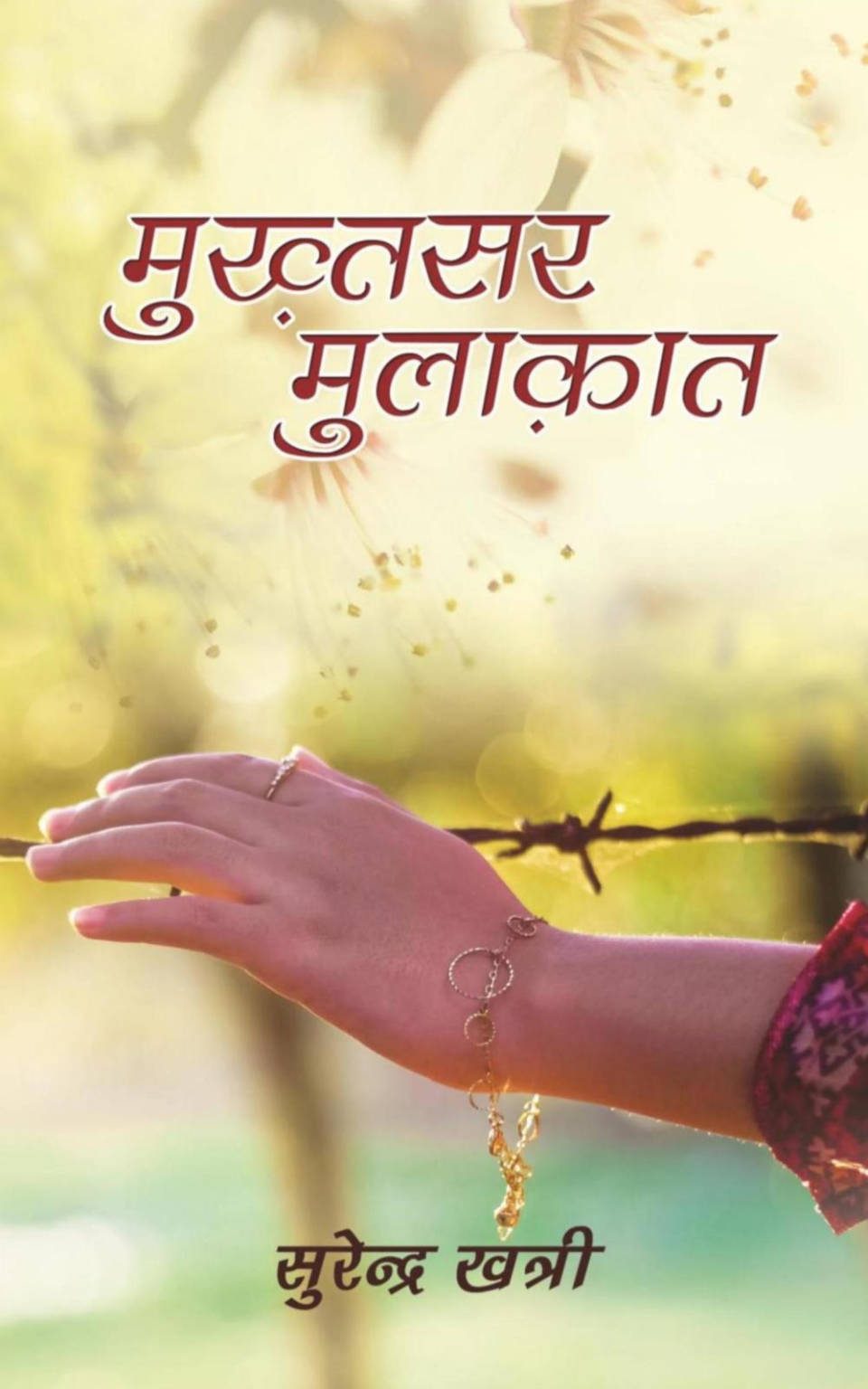

सुरेन्द्र खत्री

मुख़्तसर मुलाक़ात

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-93-6026-358-4

Price: ₹ 245.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher.

Printed in India

मुख़्तसर मुलाक़ात

सुरेन्द्र खत्री

दो शब्द

कवि तथा कवि कर्म का निर्वाह करते हुए किताबे तो बन जाती है, जो के मन के भावो को पाठक के सामने पेश भी कर देती हैं,

परन्तु पाठक किस तरह से उन भावो को हुबहू शीशे में उतारे?

यही तो कवि कर्म की कसोटी है, जिससे कवि को गुज़रना होता हैं,

जो पाठक को भा गया वो बन गया निराला, जिसके पन्नो की भाषा ह्रदय को सुनाई पड़ गयी वो कवि कर्म को श्रेष्ठ कर गया और बन गया कविराज। इस पुस्तक के जरिये में भी कवि कर्म में शामिल हो रहा हूँ ,

आशान्वित हूँ की पाठक के ह्रदय के ज्यादा नहीं तो कुछ तार जरुर झंकृत कर सकूँ

कुछ धुंधली यादो को उनके सामने फिर से जीवित कर सकूँ

बन सकूँ कवि इतिहास का हिस्सा, इसी कामना के साथ।

आभार

सुरेन्द्र खत्री

पुस्तक के बारे में

भरी दोपहरी छत के ऊपर पेन कापी लेजाकर बेठ जाता सोचता आज ज़रूर कुछ अच्छा लिखूंगा।

ऊपर बेठा बेठा आसमान को तरासता रहता और ख़यालो के पुल बांधता रहता और बातो को पन्नो पे उतारता रहता कभी गीत बनता तो कभी कविता।

हाँ ये ग़ज़ल शेर तो 19 का होने के बाद लिखनी आई हैं पहले तो बस गीत ही थे जो बन जाते थे अपने आप।

शायद यही होता हैं हर कवि के साथ वो क्या करने बेठता है और क्या बना के उठता हैं वो, वो भी नहीं जानता और उसी तरह की रचनाओं का संग्रह हैं मेरी किताब

मुख़्तसर मुलाक़ात।

मुख़्तसर मुलाक़ात मेरी प्रथम रचना है, जो पाठको को प्राप्त हुई हैं, प्रथम रचना होते हुए भी इसमें मैने अपने

कवि कर्म की शुरूआती कविताओ को सम्मिलित करना सही नहीं समझा, क्योकि वो कविताए इस शीर्षक को उचित रूप से संतुष्ट नहीं करती।

यह पुस्तक युवा मन के उन भावो को, आकान्शाओ को व्यक्त करते हुए आगे पढ़ती हैं जो, हर व्यक्ति के जीवन में किसी ना किसी मोड़ पर ज़रूर महसूस होती हैं।

पुस्तक में सम्माहित कविता, ग़ज़ल, एक प्रेमी के उन सभी ख़यालो को, जो वो अपने प्रिये के लिए महसूस करते हैं, उसके साथ होते हुए और ना होते हुए भी को पेश करती हैं।

मुख़्तसर मुलाक़ात में उर्दू और हिंदी की जुगलबंदी, कविता और ग़ज़ल शेर को एक करती है।

इसमें मेरी 19 ग़ज़ल और कविताए पेश की गयी हैं, आशा है पाठक गण का स्नेही बनू।

धन्यवाद
सुरेन्द्र खत्री

लेखक के बारे में

माफ़ किजियेगा, अपने हाथो से अपने बारे में लिख़ रहा हूँ, कोशिश हैं अपने मुंह मियाँ मिठु को सार्थक ना करू। मेरा जन्म सन 1995 को राजस्थान के बाड़मेर जिले के गाँव बिशाला में हुआ।

बच्चपन से कविकर्म में इतनी रुचि नहीं थी।

परिवार में सब अपने आप में कवि ही थे, तो मुझे भी शौक शुरू से था मगर मेरा लेखन के प्रति जुड़ाव तब से हैं जब मैं ग्यारवी कक्षा में था, तभी मेने अपनी पहली कविता को पन्ने पर उतारा था,

तब से लेके आज तक बस यही मेरा साथी है पन्ना और पेन।

श्री बच्चन जी की कविताओं ने शुरू से प्रभावित किया, जिसमे मधुशाला तो मेरे जीवन का हिस्सा बन गयी हैं।

ज्यादा नहीं कहूँगा, आशा हैं अगली पुस्तक में मेरे बारे में मुझे खुद न लिखना पड़े।

धन्यवाद

विषय–सूचि

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	दोराह	2
2.	उम्मीद	4
3.	शुक्रिया	7
4.	जा रहे थे	10
5.	मुख़्तसर मुलाक़ात	15
6.	दिल का दर्द	18
7.	अच्छा है	21
8.	नई शुरूआत	24
9.	क्या यही ज़िंदगी का नाम हैं	27
10.	काश	30
11.	अकेले है	33
12.	क़श्मकस	36
13.	इतफ़ाक	39
14.	छू कर तो देखो	41
15.	बदमाशिया	44
16.	सखी	47
17.	हद है	49
18.	प्रेम की डोर	52
19.	निसा	55

मुख़्तसर मुलाक़ात

१

दोराह

वक़्त की लपटों, राह की झपटो में,
ख़ुशी के पल, और ग़मो के महल,
सब गुज़र गये,
पर अब ये कैसा दोराह हैं

देख के लब हैं की सिमट से गए हैं,
आँसू भी पहलू में, छिप से गए हैं,
ग़र होता पता दोराह मिलेगी,
कम्बख़्त राह ही कोन चुनता,
वो भी गए, हम भी गए,
देख लिये महफ़िलो के उज्जाले,
वो, जो ग़मो की बत्तियो को छुपा से रहे थे,

महफ़िलो के उज्जाले, ग़मो की राते
सब गुज़र गए,
अब ये कैसा दोराह हैं ?

मुख़्तसर मुलाक़ात

२

मुख़्तसर मुलाक़ात

"निगाहें अंजुमन में, भीड़ की हद नहीं,
कहीं आशिक़ों के मेले हैं, कहीं अश्कों के मेले हैं"

FSP
FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE
Flipkart
GET IT ON Google Play
amazon
amazonkindle

EBOOK AVAILABLE
ISBN 978-93-6026-358-4
9 789360 263584